

रूकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया ॥
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा ।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै ।

सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा ॥

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी ।
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये ॥
करिये सरल तिहुं जोग अपने देख निरमल आरसी ।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी ॥
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता ।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों ।

शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में ॥

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्राणी ॥
प्राणी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं ।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल मल भूयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै ।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज ।

साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी ॥

उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै ।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये ।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये ॥